National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2015; 1(1): 46-48
© 2015 NJHSR
www.sanskritarticle.com
Received: 28-08-2015
Accepted: 29-08-2015

डॉ. शंकर ए.राठोड ,
धर्म-दीप प्लाट-157, पूजा कॉलोनी,
विश्वविद्यालय के पास,
गुलबर्गा,कर्नाटक राज्य

Correspondence:
डॉ. शंकर ए.राठोड ,
धर्म-दीप प्लाट-157, पूजा कॉलोनी,
विश्वविद्यालय के पास,
गुलबर्गा,कर्नाटक राज्य

राम काव्य की प्रासंगिकताः एंव स्त्री सशक्तिकरण

डॉ. शंकर ए.राठोड

आज ईक्किसवी शताब्दी भूमंडलिकरण का दौर, विज्ञान एंव तंत्रज्ञान का युग, सारा विश्व एक परिवार जैसा होना, संसार के २५० देश में जो भी कुछ चल रहा है उसे आज हम घर बैठकर देख सकते है, जितनी तकनिकी क्रांती हमारे बिच हुई है, मोबाईल, इंटरनेट, फेसबुक,वाट्साआप जैसे दो दिलों और देशो को एक साथ लाने वाले नवीन अविष्कार, एक के बाद एक नवीन संशोधन क्या कुछ नही हो रहा है आज इस संसार में ? लेकिन आज का दौर ग्लोबल गांव का दौर है क्या हिन्दुस्तान क्या अमरिका, शायद ए तो आज हमारे लिये एक इलाके के अलग-अलग गांव जैसे हो गये है कि सुबहः जावो और शाम को वापस घर आजावो, ऐसे युग में हम आज स्त्री सशक्तिकरण, रामकाव्य , दलित चेतना, आदिवासी चिंतन, भूमंडलिकरण आदि विषय को लेकर अंतर्राष्ट्रीय तौर पर चर्चा मश्वरा करने लगे है। लेकिन आज मेरे दिमाग में एक प्रश्न उठता है कि राम काव्य, राम का अस्तित्व एंव राम की प्रासंगिकता को लेकर।

भारतीय साहित्य का जन्म संस्कृत साहित्य से माने जाते है और भारतीय प्राचीन सभ्यता है सिंधू नदी की सभ्यता। सिंधू सभ्यता का समय इ.पू २५०० से ३००० वर्ष ठहरता है। वैदिककाल से लेकर आज ईक्किसवी शताब्दी, ५००० वर्ष को पार कर चूके है, और हमारे जो महाकाव्य कहलानेवाले 'रामायण' और 'महाभारत' की जनप्रियता उतनी ही है जो इ.पू ५-६ वी शताब्दी में थी। रामायण का नायक धिरोदत्त महापुरूष, लोकनायक, मर्यादा पुरूष श्रीराम, अयोध्या के राजा, दशरथ के पुत्र, सीता के आज्ञाकारी पति श्री राम। महाभरत का नायक वैष्णव के अवतार कहलानेवाला, लोकोद्धारक, न्याय पालक, गोपियों के चित्तचोर, पाण्डवों का सारथी, यशोधा और नंदलाल के प्यारा पुत्र कंस संहारक श्री कृष्ण। संस्कृत भाषा के ये महाकाव्य रामायण को ऋषी वाल्मीकी ने राम को नायक बनाकर रचना की है तो महाभारत को मूनी व्यास ने कृष्ण को नायक बनाकर दो महाकाव्यो की रचना तो हो गयी, इतना ही नही संसार के हजार से ज्यादा भाषाओं में इन ग्रंथों का अनुवाद हो गया, इ.पू ५-६ वी शती से लेकर आज तक लगातार राम या कृष्ण को लेकर एक न एक साहित्य लिखा जा रहा है, वे भाषा भारतीय हो या यूरोपीय।

हिन्दी, कन्नड, बेंगाली, मराठी, गुजराती, तमिल आदि भाषाओं में प्रचूर मात्रा में राम काव्य या राम चरित्र पर लिखा गया है और आज भी हजारों कृतिया लिखि जा रही है। लेकिन मुझे लगता है कि क्या आज तक ६-७ हजार वर्षों के इतिहास में राम या कृष्ण से महान व्यक्तिवाला महापुरूष कहो या लोकनायक कहो कोई भारत में जन्म नही ले पाया है ? क्या जो प्रचार राम और कृष्ण को मिली अन्य पुरूष को क्यों न मिली ? क्या राम और कृष्ण के व्यक्तित्व को प्रचार में लाने के लिये वैदिक संस्कृति का ब्राह्मणवादी हाथ काम नही किये है ? यह प्रश्न आज भी मेरे सामने प्रश्न बनकर रह गये है। राम और कृष्ण काव्य का मूल स्त्रोत्र ग्रन्थ है श्री मद् भागवत और जयदेव के गीतगोविन्द जैसे ग्रन्थ आते है।

हिन्दी साहित्य में भक्ती का उदयः- ऐसा तो भक्ति का उद्भव का इतिहास बहुत पूराना है लेकिन हम अगर हिन्दी साहित्य के संदर्भ में अगर भक्ती और राम काव्य को अगर देखा जाये तो, भक्ती साहित्य का उद्भव एक प्रकार राजनीतिक पराजय का परिणाम कह सकते है। आचार्या रामचंद्र शुक्ल के अनुसार-"अपने पौरूष से हताश जाती के लिए भगवान की शक्ती,और करूणा की और ध्यान लेजाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग क्या था ?" [1] इस भक्ती साहित्य के विकास के संदर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते है कि-हिन्दी साहित्य में भक्ती का उदय कहानी को न तो पराजीत मनोवृत्ती का परिणाम मानते है न ही कि मुस्लिम राज्य की प्रतिष्ठता की प्रतिक्रिया। जब मुस्लमान लोग उत्तर भारत में मन्दिर तोड रहे थे, उसी समय दक्षिण भारत मे लोगों ने भगवान की शरणागती की प्रार्थना की। वे आगे कहते है कि समुचे भारत के इतिहास में अपने ढंग का अकेला साहित्य है, जो इसी के नाम है भक्ती साहित्य। यह एक नयी दुनिया है, मनुष्य जीवन के निश्चित लक्ष और आदर्श को लेकर चला है।"[2] भारतीय संस्कृति मूलतः धर्म प्रधान है, इस तथ्य को हमारी प्राचीन धर्म ग्रन्थ स्पष्ठ रूप से घोषित करते है। भारतीय देवी-देवताओ का अस्तित्व आज भी हजारों सालो के बाद मंदिरों में उनके नृत्यकला आदि को हम देखते है। हम अगर साहित्य की बात की जाये तो रामायण से लेकर, जितने भी धर्मग्रन्थ है जो बुद्ध चरित्र, महाभारत, कुमार संभव, रामचरित मानस आदि ग्रन्थ हमें मिलते है अगर राम की कल्पना को देखा जाये तो ऋग्वेद से लेकर निराला के राम की शक्ती पूजा और आज भी बहूत सारे ग्रन्थ संहिता में राम सीता, दशरथ, जनक आदि नाम आते है। विष्णु का उल्लेख ऐसा तो ऋग्वेद में मिलता है लेकिन जो प्रथम श्रेणी में आने वाले देवताओं में नही है, विष्णु को इंद्र के सहयोगी के रूप में मिलता है दिखाई पडते है लेकिन कुछ विद्वानो ने राम-सीता का संबंध सीधा वैदिक काल से जोडते है कि वैदिक लेकिन जो वाल्मीकी के रामायण का संदर्भ राम का व्यक्तित्व कही वेद काल में नही मिलता है । महाकाव्य रामायण में वाल्मिकी ने राम को पूर्व के जैसा कोई अवतार पुरूष या भगवान का न होकर राम का रूप महापुरूष का है जो अयोध्यापति राजा राम का है।

इतिहासकार जयचंद ने लिखा है कि-" कालिदास के समय तक राम को विष्णु नही मानाजाता, राम को भगवान मानने की भावना पाँचवी शताब्दी की बहुत बाद की है। आठवी शताब्दी में शंकराचार्य का अद्वैतवाद से बौद्ध धर्म को गहरी चोट पंहुचा दी,आगे रामाजुनाचार्य ने श्री संप्रदाय के नाम से चल पडी,। आगे विक्रम की चैहदवी शताब्दी में श्री संप्रदाय के प्रधान आचार्य 'राघवनंद' अवतरित हुए और राम चरित्र को बढावा मिला। राघवनंद ने रामानंद को दीक्षा प्रदान किये, रामानंद ने भारत भर भ्रमण कर अपनी सत्ता को आगे बढाया। आगे रामानंद के शिष्य परम्परा में आने वाले तुलसीदास जैसे भक्त आये जो राम काव्य का जैसै संक्रमणयुग कहते है।

राम का उल्लेखः- मैं पूर्व में ही कह चुका हूँ कि राम और कृष्ण की भक्ती अर्थात वैष्णव भक्ती कहलाती है। लेकिन राम और कृष्ण को वैदिक समय में खोजना असंगत नही है। वेदों में विष्णु का उल्लेख मिलता है लेकिन वेद में जो विष्णु का उल्लेख है वह भागवत या सारस्वत संप्रदाय के राम और कृष्ण से अलग है। वैदिक समय तो इ.पू १५०० मानते है, लेकिन सारस्वत सम्प्रदाय का विकास इ.पू ५ वी शताब्दी में हो चुका था। महाभारत में भी सारस्वत का उल्लेख मिलता है। आगे चलकर भागवत का उल्लेख पंचरात्रो में दिखाई पडता है। आगे चलकर भागवत का उल्लेख हिन्दू धर्म ग्र न्थ गीता और पुराणों में नजर आता है, आगे चलकर वैष्णव भक्ती के स्त्रोत प्रमुख है नारद और साण्डिल्य भक्ती को प्रेमाभक्ती की संज्ञा दी है। भक्ती सूत्र को दृढता प्रधान किया नारद ने लेकिन सबसे प्रमुख जो है वे पुराण। पुराणों में राम और कृष्ण के चरित्र और उनकी लिलाओं को एक अलग रूप से नया आयाम प्रदान करते है। इ.पू ५-६ शताब्दी में वैदिक धर्म के कर्मकाण्ड के कारण एक साथ अनेक धर्मो का उद्भव हुआ जो- बौद्ध धमर्, जैन धर्म, और वैष्णव धर्म। निम्नलिखित धर्मो में अहिंसा और उदारता को लेकर चलने लगे, बोद्ध धर्म तो आत्म शुद्धी पर ज्यादा जोर देने लगा, तो वैष्णव धर्म ने भगवान की भक्ती का आश्रय लिया। वैष्णव धर्म अवतारवाद में विश्वास रखने लगा और आगे चलकर विष्णु के दो अलग-अलग रूप सामने आ गये वे ही राम और कृष्ण। ईश्वरदास हिन्दी में रामकाव्य का प्रर्वतक माने जाते है। हिन्दी के रामकाव्य का प्रतिनिधी कवि कहे या लोकनायक तुलसीदास ने रामायण के बाद रामचरितमानस के द्वारा राम को प्रतिष्ठा दिलायी जो इ.पू भी राम को इतनी जनप्रियता न मिल पाई थी।

रामकाव्य एंव स्त्री सशक्तिकरणः- स्त्री सशक्तिकरण का शाब्दिक अर्थ होगा, स्त्री को ताकतवर बनाना। हर क्षेत्र में ज्ञत्री सशक्त हो, सबसे पहले आर्थिक, सामाजिक एंव पारिवारिक घरेलु समस्याओं से पुरी तरह से स्वतंत्र हो कि उसे भी पुरूष के बराबर फैसला करने का अधिकार प्राप्त हो। स्त्री सशक्तिकरण का अर्थ होगा कि अगर स्त्री को प्रबल होना है तो उसकी भागिदारी हर क्षेत्रों में हो। राजनिति से लेकर सार्वजनिक क्षेत्रो में वे खुलकर आगे आये। स्त्री को सशक्त बनने में सबसे प्रमुख अंश होगा शिक्षा। अतः हर भारतीय स्त्री शिक्षा पाकर अपना हक मांगे। लोगों में मनुवादी धारण समाप्त हो, स्त्री को प्राचीन काल से केवल भोग की वस्तु या चारदीवारी के बीच बंधी थी, उसे मुक्त करने की धारणा उस पुरूषवादी सोच में परिवर्तन हो। प्राचीनकाल से स्त्री को समय-समय पर मान-सम्मान के लिये लडना पडा, हर वक्त वे युद्धरथ थी, और आज भी अपने आप से युद्ध करती रहती है। उसका शारिरिक रूप उसके लिये पिढा सा बन गया है। एक जगहःतस्लीमा नसरिन कहती है कि-"पुरूषो ने स्त्री को यंहा तक लूटा है कि स्त्री की हर चीजें,वस्त्र, खान-पान पोषाक और आवरण यंहा तक की उसके जूते भी उनके लिये बाधक है जो पुरूष के अनुकुल है। स्त्री या लडकियों को पायल क्यों पहनाया गया कि पति, पिता,या पुरूष को मालुम पडे कि अंधेरा हो या उजाला पायल की आवाज से ही पता चल जायेगा कि स्त्री या लडकी कंहा जा रही है हिल्सवाले चप्पल क्यों पहना दिये गये लडकियों को कि पुरूष के हाथों बचकर भाग न सके। अतः पुरूष की हर सोच स्त्री को अंदर से खोखला बना दी गई है।" [3] इतिहास को देखो पता चलेगा कि कोई वेद, पुराण, संहिताएँ या यहाँ तक कि धर्मग्रन्थ भी स्त्री के खिलाफ है और पुरूषों के अनुकुल। और आज हम चर्चा कर रहे है रामकाव्य की, क्या रामायण में सीता सुखी थी? क्या राम उसे खुश रख पाये थे? नही।

रावण को मारने के बाद क्या राम का फर्ज नही बनता कि सीता से मिले? लेकिन उन्होने विभिषण का राज्यभिषेक किया फिर सीता से मिलने के लिये स्वयं नही जा सके बल्कि दूत हनुमान को सीता के पास भेजा गया। सीता इतने दिनो से राम से दूर थी, क्या कोई पुरूष अपनी पत्नि को मिलने की लालसा दिल में नही होती ? क्या आज का सामान्य व्यक्ति भी ऐसा व्यवहार अपनी पत्नि के साथ करेगा, कदापि नही।

राम की प्रासंगिकताः- विश्व के हजारो भाषा में राम काव्य लिखे गये है, हजारो अनुवाद हुए है। राम हमारे लिये भगवान है, महापुरूष है, मर्यादापुरूष है, आर्दश राजा है, आर्दश पति है, बुराई पर अच्छाई का प्रकाश देने वाला एक लोकनायक है, जननायक है, राम के नाम में ही ऐसी शक्ती है जो हर समस्या का हल होता है। आज भी राम की पुजा होती है, भगवान मानकर उसकी आरती, भजन किर्तन, सेवा, पाठ और बहुत कुछ है राम का व्यक्तिव। मर्यादापुरूषोत्तम राम के नाम के सामने इतनी उपमाएँ तो जरूर है लेकिन अगर स्त्री पक्ष को लेले तो क्या राम या राम काव्य स्त्री पक्ष में है? अगर है तो कैसा? नही है तो विरोधी कैसा है? राम चरित्र को लेकर लिखे गये ग्रन्थ है संस्कृत भाषा में वाल्मीकी द्वारा रचित रामायण और हिन्दी में लिखित लोकनायक तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस'। रामायण की कथा आप सब जानते है कि राम और रावण के बिच का युद्ध है जो राम की पत्नी सीता को लेकर बदला लेने की भावना से सीता का अपहरण रावण द्वारा हुआ, फिर राम की वानर सेना और लंकापती रावण की सेना के बीच चलने वाला लंबा युद्ध, एक बुराई पर अच्छाई का युद्ध था, इस युद्ध में जीत जरूर राम की हूई, सीता को द्रोही रावण से मुक्त तो अवश्य करवाई लेकिन राम के जीत के बाद जो धर्म पत्नी सीता के द्वारा किया गया व्यवहार क्या एक स्त्री के पक्ष में था? कदापि नही सीता पर शंका करने वाले भगवान मर्यादापुरूषोतम कहलाये राम को क्या सीता की ईमानदारी पर इतनी शंका थी, कितनी उन परिक्षाओं से गुजरने के बाद भी राम सीता का अपमान कर उसे त्यागता है, यह क्या मर्यादा पुरूषोत्तम या आदर्श पति कहलायेगा?

रामायण में वाल्मिकी ने लिखा है कि- "युद्ध में शत्रु को हराकर मैनें तुम्हे ईनाम के तौर पर पाया है। मैने शत्रु को दंडीत कर अपना खोया हुआ सम्मान पुनः अर्जित कर लिया है लोगों ने मेरी सैन्य शक्ती को पहचाना और मुझे प्रसन्नता है कि मुझे अपनी मेहनत का फल मिला है। मैने यह श्रम तुम्हारे लिये नही किया है" [4] क्या निम्नलिखित वाक्य हमे उलझन में नही डालते है ? जब श्री राम वनवास के लिये निकले तो सीता यंहा तक कि बिना कुछ प्रश्न के राम के साथ निकल पडी। महल में रहने वाली राजा जनक की पुत्री अपने पति के साथ जंगलों में रहने लगी और रावण को हराकर राम कहने लगे कि मैने अपनी खोई ईज्जत को वापिस पालिया हूँ। क्या पत्नि को सांतवना देने का एक भी मानविय व्यवहार राम के पास नही था ? राम को सीता के चरित्र पर संदेह रहता है,-" मुझे तुम्हारे चरित्र पर संदेह है रावन ने तुम्हे भृष्ठ किया होगा। मुझमें तुम्हारे दर्शन से वितृष्णता जागती है। अरे!जनक की पुत्री तुम्हे इजाजत देता हुँ कि तुम जंहा चाहो चली जाओ मेरा तुमसे कोई वास्ता नही है। तुम जैसी सुंदरी को रावन स्पर्श भी नही किया होगा मै कैसे विश्वास करू ? " [5] एक मर्यादा पुरूष कहलाने वाले राम के मन में ऐसी उलझन क्यों आ गयी। राम युद्ध के बाद सीता को त्याग करना चाहते थे लेकिन सीता राम के सामने हर अग्नि परिक्षा से गुजरने के लिये तैयार हो गई, अनिवार्यवशः सीता को अयोध्या लाना पडा। जब राम तो अयोध्या के राजा बन गये और सीता को रानी बनाने में कितने दिन लग गये ये तो वाल्मिकी ही जानते थे, में नही। जब सीता गर्भवती हो गयी, तो क्या पति का फर्ज नही बनता कि पत्नि का अच्छा-बूरा देख सके, कम से कम पत्नि को अपने साथ रख सके? लेकिन राम यंहा पर भी पहले वाली गलतियां कर गये। लोगों ने सीता के प्रति राम के व्यवहार को देखकर यह सोचने लगे कि क्या सीता के गर्भ में राक्षस रावण की संतान तो नही है? यंहा पर राम ने सीता को जंगल में छोड दिया गया। राम लक्ष्मण को बुलाकर कहते है कि-"लंका में ही सीता की परिक्षा की गयी है, उसे

देवताओं का आशिर्वाद भी मिल चुका है, वे भी विश्वास करते है, लेकिन फिर भी लोग सीता के चरित्र पर उंगलिया उठाने लगे है, मुझे बदनाम करने लगे है। अतः मुझे शर्मसार होना पड रहा है। इज्जत सबसे बडी संपती है इसे बचाने के लिये मै सीता को त्यागता हूँ।" [6] एक आदर्श पति के लिये गर्भवती पत्नि से ज्यादा उसका मान सम्मान ही प्रमुख था। क्या इस उद्धरण या घटना से हमें आज स्त्री सशक्तिकरण की प्रेरणा मिलेगी ? क्या राम काव्य की प्रासंगिकता आज भी है ? आदि प्रश्न हमे सोचने पर मजबूर करते है। सीता को अपने अपमान के लिये त्यागने वाले राम से हमारी युवा पिढी को क्या सिख मिल पायेगी ? जब सीता को यह मालुम होता है कि राम को मेरे लिये बदनामी का सामना करना पड रहा है, तब सीता ही अपने आप को त्यागती है और कहती है कि मै कुछ दिनो के लिये अकेली रहना चाहती हूँ , सीता स्वयं इस बदनामी के कारण मौत को गले लगाना चाहती है और गर्भवती सीता अकेली जंगल में चली जाती है। जब जंगल में पास में स्थित वाल्मिकी के आश्रम में शरण लेती है, उसी आश्रम में सीता अपने गर्भ के दिन बिताती है, उसी आश्रम में सीता जूडवा पुत्रों को जन्म देती है, लव और कुश दोनो बच्चों के साथ सीता उसी ऋषी के आश्रम में रहती है। राम ने यह भी नही सोचा कि गर्भवती सीता को जंगल में गये कितने दिन हो गये, वे है या नही, किस हालात में है ? कुछ खबर तक नही ली, ऐसे व्यक्ति के चरित्र से क्या सिख पायेंगे आज की पिढी ? लव-कुश के जन्म के बारह वर्ष के बाद राम और सीता की मुलाकात होती है वह भी राम के एक यज्ञ में। यज्ञ में राम सीता को आमंत्रण नही देता लेकिन ऋषी के साथ लव-कुश इस यज्ञ में पंहुचे। ऋषी ने सीता को यह आज्ञा दी कि अगर वे पतिवृत्ता है तो वे इस सभा में सपथ लेकर अपने माथे पर लगे कलंक को मिटा ले। भरी सभा में ऋषी राम से कहते है कि अगर चाहे तो सीता इस भरी सभा में और एक बार परिक्षा दे सकती है। इस प्रकार भरी सभा में सीता को और एक बार परिक्षा देनी पडी मै शुद्ध हूँ। सीता सपथ लेती है-" मै अपने जीवन में राम के अतिरिक्त किसी अन्य पुरूष के बारे में सोचा हो तो धरती फट जाये, मै उसमें समा जाऊ। अगर मै राम से ही प्यार करती हूँ तो धरती माँ मुझे अपनी गोद में समा ले" । धरती फट जाती है और सीता धरती में समा गई, इस प्रकार एक पवित्र स्त्री सीता को राम ने जमीन में धंसाकर ही दम लिया है, तो क्या राम की या राम काव्य की प्रासंगिकता की बात करेंगे ? निम्नलिखित घटनाएँ कोई मै नही कह रहा हूँ बल्कि हमारा महाकाव्य 'रामायण' की घटनाऐ है जिसे वाल्मिकी ने लिखा, यह काव्य सच है या काल्पनिक यह बात दुसरी है लेकिन आज इक्किसवीं सती स्त्री विमर्श या स्त्री सशक्तिकरण का दौर है, राम से प्रेरणा पाने वाले हमारी नयी पिढी राम को लेकर यह व्यंग्य करते है कि राम ने सीता पर शक किया था।

निष्कर्षः- मै राम और हनुमान का भक्त हूँ, मै आस्थिक हूँ , लेकिन अगर प्रासंगिकता के विषय के विश्लेषण पर हम राम काव्य की प्रासंगिकता से सहमत नही होंगं। राम राज्य की कल्पना गांधीजी ने की थी, आदर्श राज्य और राजा तो राम बने ही लेकिन मेरा मत है कि एक आदर्श पति न बन सके। आज रोज जो खबरे है स्त्री पर बलत्कार, अत्याचार, अन्याय, घर से लेकर कार्यालय, ऑफिस, बाजार, सार्वजनिक स्थल जंहा भी देखो स्त्री पर हमले आम विषय हो गया है, वे जँहा कही शोषित है, पीडित है, क्या राम काव्य के द्वारा इस बलत्कार जैसी घटना को रोक पाते है ? राम स्वयं अपनी पत्नि के साथ न्याय नही कर पाया। स्त्री सशक्तिकरण के लिये पुरूष वाली सोच में बदलाव की जरूरत है, हमे यह समझने की जरूरत है कि स्त्री से ही सृष्ठी विकास है, वह देवी है, माँ है, बहन है कही पत्नि, प्रेमिका, बेटी आदि रूपों में वह अपना रिश्ता नाता निभाती हे, उसे भी आर्थिक एवं सामाजिक स्वतंत्रता की जरूरत है, लोगों का मन मनुवादी धारणा से मुक्त होना जरूरी है जैसे "यत्र नार्यास्तू पुज्यंते तत्र रमंते देवता" की युक्ति हमारे दिलो-दिमाग में आनी चाहिये।

और आज एक स्त्री व्यक्तित्व के अस्तित्व पर प्रहार करने वाला विषय कर्नाटक राज्य में चर्चा का विषय बन गया है कि कई आलोचको, विमर्शको का कहना है कि वैश्यावृत्ती को कानुनिय मान्यता प्रदान करो कि इससे बलत्कार जैसी घटना पर रोक ला सकते है यह कितना अमानविय और हास्यास्पद विचार है, इससे हमारी माँ-बहनो पर क्या बितता होगा? क्या इस समस्या का हल राम काव्य कर सकता है? आज संदर्भानुसार हमें हमारी कानून नितीया बदलनी चाहिये कि जो स्त्री-पुरूष जातपात को मिटाकर एकता और सभ्यता के आधार पर न्याय दिला सके।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ शिवकुमार शर्मा
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ गणपति चंद्रगुप्त
3. महाभारत कथा- डॉ केदारनाथ
4. स्त्री विमर्श- विमलसिंह
5. औरतो के हक्क में- तस्लिम नसरीन
6. रामायण टीका (कन्नड में)- शिवप्रभु